ऍन जंगमैन

ब्रेमेन के संगीतकार

ब्रेमेन के संगीतकार

पुनर्कथन
एॅन जंगमैन

चित्रांकन
जेम्स मार्श

अनुवाद
अरविन्द गुप्ता

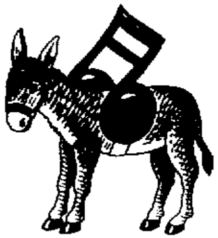

"इसे उधर ले जाकर डालो," चक्की का मालिक अपने गधे पर चिल्लाया और यह कह कर उसने उस ग़रीब जानवर की पीठ पर कई घूँसे जमाये।

गधे ने धीरे-धीरे आगे बढ़ने की कोशिश की। उसकी पीठ पर अनाज के दो भारी बोरे लदे थे।

"और तेज़!" चक्की का मालिक फिर चिल्लाया।

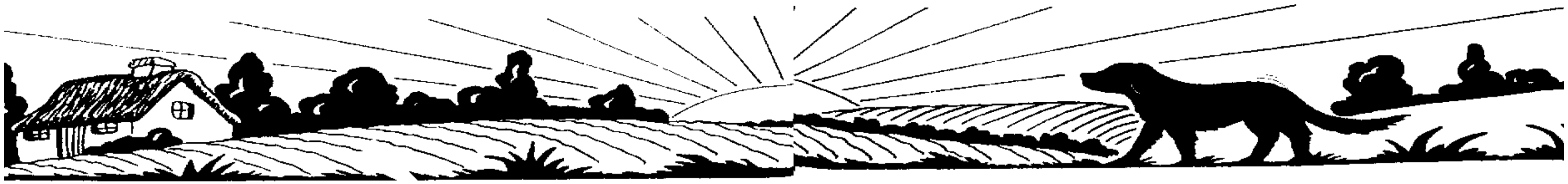

उसका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। “तुम फटाफट माल पहुँचाओ, नहीं तो मैं तुम्हें कसाईखाने भेज दूँगा। बुढ़ापे में तुम किसी काम के नहीं रहे हो।”

गधे की आँखों में आँसू भर आये। इतने सालों तक उसने अपने मालिक की जी-तोड़ सेवा की थी। अब वह बूढ़ा हो रहा था और अनाज के भारी बोरों को उठाना उसके लिए मुश्किल हो रहा था। उसने तेज़ चलने की कोशिश की, लेकिन वह फिसल कर गिर पड़ा। सुनहरी मकई के कुछ दाने सड़क पर बिखर गये।

“देखो, यह तुमने क्या किया!” चक्की का मालिक ज़ोर से चिल्लाया, “अब तुमने मेरी कुछ मकई भी गिरा दी।”

उसी समय चक्की के मालिक की बीवी सामने वाले दरवाज़े से दौड़ते हुए आयी।

“इस गधे को रखना अब हमारे लिए बहुत महँगा पड़ रहा है। तुम कल इसे कसाईखाने ले जाना। कसाईखाने में इसकी हड्डियों का गोंद बना दिया जायेगा और हमें इस बूढ़े गधे के बदले में कुछ पैसे भी मिल जायेंगे।”

उस रात गधा काफ़ी देर तक जागा रहा। जब सब लोग सो गये तो वह चुपके से अपने अस्तबल से खिसक लिया और बाहर सड़क पर आया। अँधेरी रात में, सितारों के साये में चलने पर गधा खुश हो

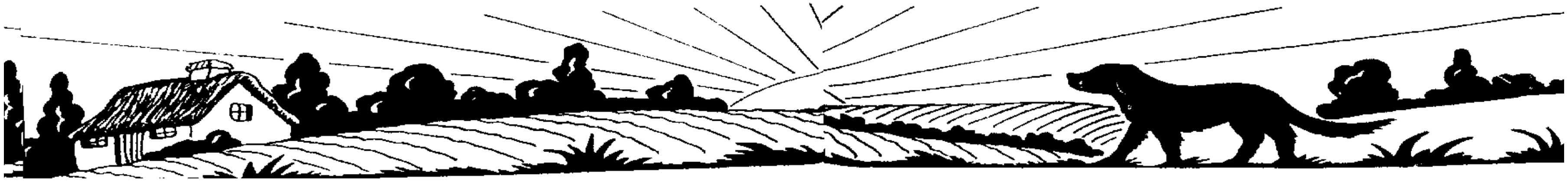

रहा था। वह अपने आपको आज़ाद महसूस कर रहा था। "इतने साल कठिन मेहनत करने के बाद मुझे बुढ़ापे में कुछ शांति तो मिलनी ही चाहिये," उसने अपने आप से कहा, "मैं ब्रेमेन के बड़े शहर में जाऊँगा और वहाँ सड़कों पर गाना गाऊँगा। ब्रेमेन के भले लोग मेरा मधुर संगीत सुनने के बदले मुझे कुछ पैसे तो दे ही देंगे।"

सड़क पर चलते-चलते गधे ने संगीत का अभ्यास करना शुरू किया: "ढेंचू, ढेंचू, ढेंचू!" वह खुशी से खुद अपने लिए गाने लगा।

तभी उसे किसी के हाँफने की आवाज़ सुनायी दी। चाँद की रोशनी में गधे को सड़क-किनारे एक मरियल-सा शिकारी कुत्ता पड़ा हुआ दिखायी दिया।

"क्यों, तुम ठीक-ठाक तो हो?" गधे ने बड़े अपनेपन से पूछा।

"सच कहूँ तो नहीं," कुत्ते ने उदासी के लहजे में उत्तर दिया, "देखो, मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और काफ़ी थक चुका हूँ । अब मैं शिकार के पीछे दूसरे कुत्तों जैसा तेज़ नहीं भाग सकता।"

"यह तो ठीक है," गधे ने कहा, "सभी के साथ यही होता है। अंत में हम सभी बूढ़े हो जाते हैं।"

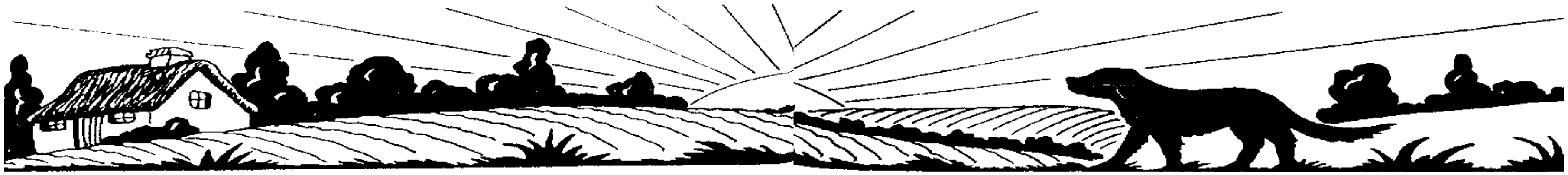

"यह तो मुझे भी पता है," कुत्ते ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "पर मेरा मालिक मुझसे इतना नाराज़ हुआ कि उसने मुझे जान से मार डालने तक की धमकी दी। इसलिए मैं भाग कर आया हूँ। पर मैं अपना पेट किस तरह भरूँगा, मुझे इसकी चिन्ता है।"

"मेरे मित्र, मैं तुमसे मिलकर बेहद खुश हूँ," गधे ने कहा, "क्योंकि मेरी हालत भी कुछ-कुछ तुम्हारी जैसी ही है। मैंने अपने मालिक—जिसकी एक चक्की है—की सारी ज़िंदगी सेवा की। सालों मैंने अनाज के भारी बोरों को अपनी पीठ पर लादकर ढोया और अब मेरा मालिक मुझे कसाईखाने भेजने की सोच रहा है। मैं भी मरने से बचने के लिए तुम्हारी तरह ही भाग आया हूँ।"

"कितने क्रूर हैं हमारे मालिक!" कुत्ते ने एक आह भरते हुए कहा। फिर उसने दुख और उदासी के अंदाज़ में अपने पंजों पर अपना सिर टिका लिया।

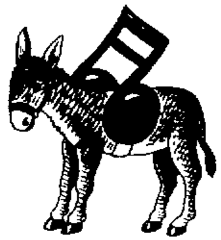

"थोड़ा हँसो," गधे ने कहा, "इतने दुखी मत हो, मुझे पता है कि अब हमें क्या करना चाहिये। मैं ब्रेमेन जा रहा हूँ, जहाँ मैं एक शहरी संगीतकार बनना चाहता हूँ।"

"एक शहरी संगीतकार!" कुत्ते ने उत्सुकतावश पूछा, "यह किस बला का नाम है?"

"मेरे दोस्त, शहरी संगीतकार असल में बहुत

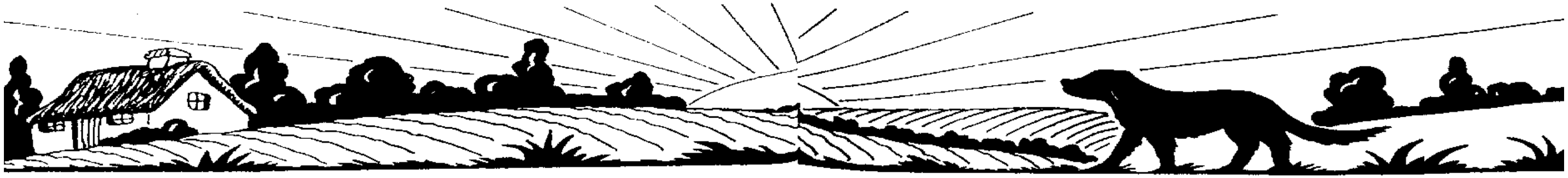

खुशनसीब लोग होते हैं। वे शहर के बीच किसी बाज़ार या किसी फ़व्वारे या फिर किसी ऐसी ही जगह पर बैठकर संगीत सुनाते हैं। हाँ, इस संगीत से आने-जाने वाले राहगीर खुश होते हैं और संगीतकारों को पैसे देते हैं।"

"फिर तुम इन पैसों से गोश्त खरीद सकते हो?" कुत्ते ने खुश होते हुए और अपनी पूँछ हिलाते हुए पूछा। "हाँ, मुझे भी संगीतकार बनना अच्छा लगेगा। मैं कितना खुशनसीब हूँ कि तुमसे अचानक ही मेरी भेंट हो गयी। चलो, अब हम दोनों साथ-साथ ब्रेमेन की ओर चलें।"

कुछ ही देर में गधा और कुत्ता आपस में पक्के दोस्त बन गये। गधा ब्रेमेन शहर की सुंदरता की तारीफ़ करता रहा और कुत्ता उसके वर्णन को मोहित होकर सुनता रहा।

"देखो, मैं वहाँ पहले कई बार अपने मालिक के साथ गया हूँ। उस जैसा और कोई शहर नहीं है। वहाँ की सड़कों पर तराशे हुए पत्थर बिछे हैं और वहाँ के चर्च की मीनारें आसमान को छूती हैं। वहाँ सभी जगह आलीशान मकान हैं और एक बड़ा फ़व्वारा है जिसमें पत्थर के घोड़ों के मुँह से पानी निकलता है। तुम्हें वहाँ रहने में बड़ा मज़ा आयेगा।"

तभी अँधेरे में से एक आवाज़ आयी: "आधी रात गये एक गधा और एक कुत्ता सड़क पर साथ-साथ चल रहे हैं। इसका क्या मतलब हो

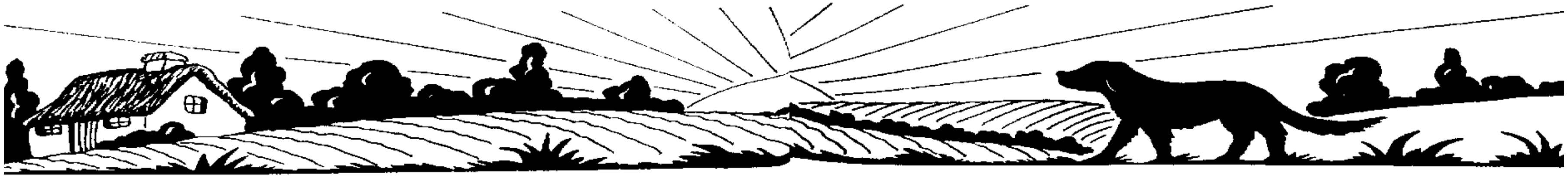

सकता है?"

सड़क के किनारे एक दुखी और मरियल-सी बिल्ली पड़ी थी। यह उसी की आवाज़ थी।

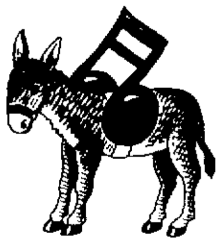

"क्योंकि हम अब बूढ़े हो गये हैं, इसलिए हमारे मालिकों को अब हमारी कोई ज़रूरत नहीं है," गधे ने बिल्ली को समझाया, "इसलिए हम लोग अब ब्रेमेन जा रहे हैं। वहाँ पर हम संगीतकार बनना चाहते हैं।"

"क्या तुम लोग सड़कों पर पैसों के लिए गाओगे?" बिल्ली ने पूछा।

"बिलकुल," गधे और कुत्ते ने सहमति जताते हुए एक साथ कहा।

"मुझ पर कृपा करो। क्या मैं भी तुम लोगों के साथ आ सकती हूँ?" बिल्ली ने प्रार्थना करते हुए कहा, "बिल्लियाँ तो वैसे ही अपने गाने के लिए मशहूर हैं और मैं तो काफ़ी अच्छी गायिका हूँ।"

"तुम्हारा हार्दिक स्वागत है," गधे ने कहा, "अगर हमारी टीम में एक अच्छा संगीतकार होगा तो बहुत ही अच्छा रहेगा। परंतु हम तुमसे अपना घरबार छोड़कर अपने साथ चलने के लिए कैसे कह सकते हैं?"

"अब मुझे घर के लोग नहीं चाहते," बिल्ली ने दुखी भाव से कहा, "देखो, मैं भी अब धीरे-धीरे बूढ़ी हो रही हूँ और पहले की तरह चूहे नहीं

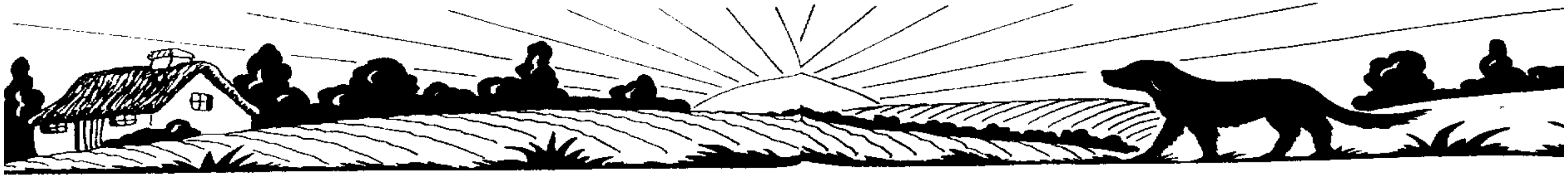

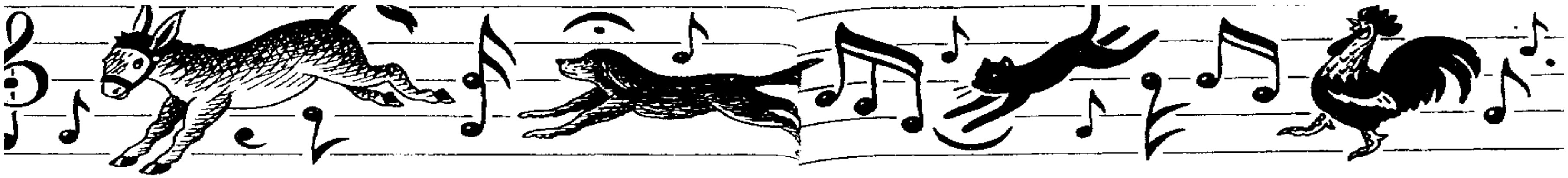

पकड़ सकती। इसलिए मेरी मालकिन रोज़ाना मुझे पानी में डुबा कर मारने की धमकी देती है।"

"भगवान न करे कि कभी ऐसा हो!" गधे ने चिल्लाते हुए कहा, "ये लोग कितने दुष्ट हैं! मेरी नयी दोस्त बिल्ली, तुम ज़रूर हमारे साथ चलो।"

फिर वे तीनों रात के अँधेरे में अपने सफ़र पर रवाना हुए। उनमें बहुत अच्छी दोस्ती हो गयी। सभी अपनी नयी-नयी आज़ादी का आनंद भी ले रहे थे। कुछ समय बाद सूर्य की सुनहरी किरणें आसपास के खेत-खलिहानों में फैलने लगीं। तभी दूर-दराज़ से उन्हें एक मुर्गे की आवाज़ सुनायी दी।

"कुकडूँ-कूँ, कुकडूँ-कूँ," मुर्गे ने बार-बार बाँग लगायी।

"मुझे मालूम है कि मुर्गे भोर का इसी प्रकार स्वागत करते हैं," कुत्ते ने शिकायत भरे स्वर में कहा, "परंतु यह मुर्गा तो बस बाँग दिये ही जा रहा है। काश, वह अपनी बाँग को बंद करता।"

आवाज़ के निकट आने पर उन्हें एक खलिहान दिखायी पड़ा जिसके दरवाज़े पर बैठा एक मुर्गा ज़ोर-ज़ोर से बाँग लगा रहा था।

"तुम्हारी ज़ोरदार बाँगों से हमारा सिर दर्द करने लगा है," गधे ने डाँटते हुए कहा, "तुम इस तरह क्यों चिल्ला रहे हो?"

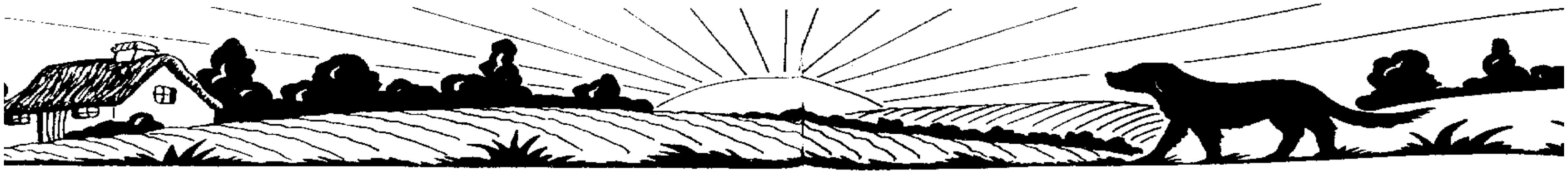

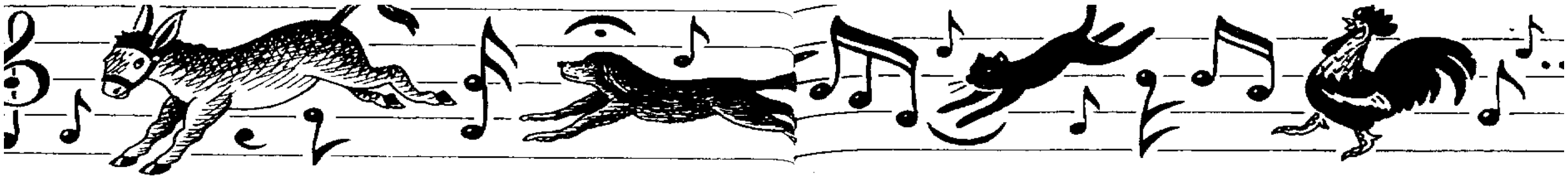

"मेरी मालकिन आज मुझे काटकर पतीली में पकाना चाहती है," मुर्गे ने रोते हुए कहा, "इसीलिए शरीर में साँस रहने तक मैं ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा हूँ। आज रात तक मेरा शोरबा बन चुका होगा।"

"यह तो बहुत बुरी बात है," गधा चिल्लाया, "तुम भी हमारे साथ चलो। हम लोग ब्रेमेन में सड़क के संगीतकार बनने जा रहे हैं। तुम्हारी आवाज़ तो बेहद बुलंद है और तुम्हारी मदद से हम काफी पैसे कमा पायेंगे।"

मुर्गा इस बात से बहुत खुश हुआ और वह भी उन तीनों के साथ-साथ सड़क पर चल पड़ा। वह सारा दिन चलते रहे। चलते-चलते वे गधे का रचा गाना गाते रहे:

"ब्रेमेन के समुद्र को देखने चले
चारों संगीतकार ब्रेमेन चले
ढेंचू-ढेंचू, भौं-भौं, म्याऊँ-म्याऊँ, कुकड़ूँ-कूँ।

वहाँ पर मिलेगा बहुत सारा धन
गायेंगे चारों लगाके तन-मन
ढेंचू-ढेंचू, भौं-भौं, म्याऊँ-म्याऊँ, कुकड़ूँ-कूँ।

ब्रेमेन में बिछायेंगे वे संगीत का जाल
और फिर जियेंगे हज़ारों-लाखों साल
ढेंचू-ढेंचू, भौं-भौं, म्याऊँ-म्याऊँ, कुकड़ूँ-कूँ।"

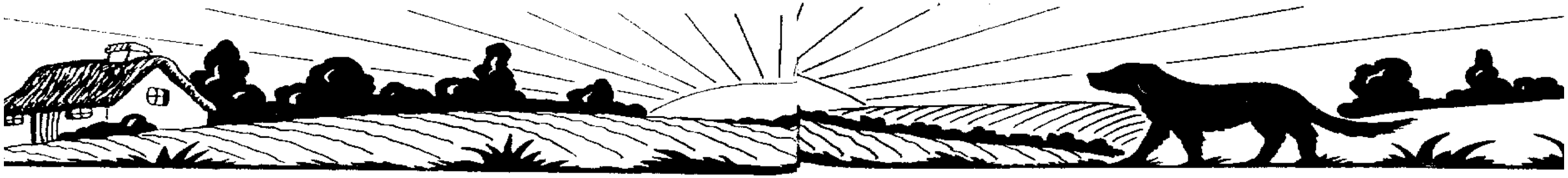

शाम के समय वे एक जंगल के अंदर पहुँचे।

"हम लोग रात के समय यहीं आराम करेंगे," गधे ने उनसे कहा, "और कल सुबह फिर ब्रेमेन के लिए चलेंगे।"

"मुझे भूख लगी है," कुत्ते ने शिकायत भरे स्वर में कहा।

"मैं प्यासी हूँ," बिल्ली ने दुखी होते हुए कहा।

"मुझे ठंड लग रही है," मुर्गे ने कराहते हुए कहा।

"लगता है, ब्रेमेन जाने का इरादा असल में कोई बहुत अच्छा विचार तो नहीं था," कुत्ते ने कुछ सूँघते हुए कहा, "असल में हमें एक घर चाहिये, ठंड से बचने के लिए आग चाहिये और पेट की भूख मिटाने के लिए खाना।"

"देखता हूँ कि इस सबकी जुगाड़ के लिए मैं क्या कर सकता हूँ," गधे ने कहा, "मुझे कुछ दूर पर एक रोशनी दिखायी दे रही है और अगर हम लोग वहाँ पर चलें तो शायद हमें ठहरने की कोई जगह मिल जाये। मेरे दोस्तो, पहली कठिनाई से आप लोग बिलकुल न घबरायें, क्योंकि आगे चलकर हमें नाम और धन अवश्य मिलेगा।"

वे उस मकान की ओर बढ़े जहाँ से रोशनी आ रही थी। वहाँ पहुँच कर गधे ने खिड़की में से अंदर झाँका।

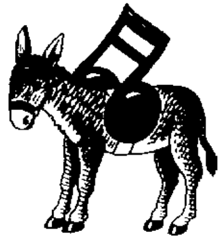

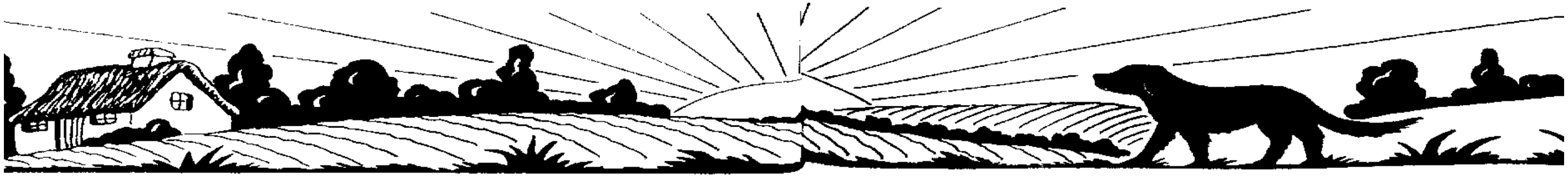

"अंदर क्या है?" बिल्ली ने धीमी आवाज़ में पूछा।

"चोर!" गधे ने जवाब दिया, "उनके चारों ओर लूटा हुआ धन बिखरा पड़ा है। पास में गर्मी के लिए आग जल रही है और एक बड़ी-सी मेज़ पर बहुत-सा स्वादिष्ट भोजन—गोश्त, सब्ज़ियाँ, चॉकलेट और बढ़िया शराब रखी है।"

"तो यह घर चोरों का है। क्या तुम्हें लगता है, अगर हम उनसे नम्रता से कुछ खाने के लिए माँगें तो वे हमें देंगे?" मुर्गे ने पूछा।

"बिलकुल नहीं देंगे," गधे ने जवाब दिया, "तुम इंसानों की आदतों से पहले ही अच्छी तरह से परिचित हो और फिर चोर तो उन सब से बढ़-चढ़ कर ख़राब होते हैं। हमें उन्हें यहाँ से भगाने की कोई चाल सोचनी होगी। इसके लिए मेरे दिमाग़ में एक योजना है।"

"फिर बताओ ना," कुत्ते, बिल्ली और मुर्गे ने एक-साथ कहा।

"सुनो, मैं अपने पिछले पैरों पर खड़ा होकर अपने अगले पैरों को खिड़की पर टिकाऊँगा। फिर कुत्ता मेरी पीठ पर चढ़ेगा और उसके बाद बिल्ली कुत्ते की पीठ पर चढ़ेगी।"

"और मैं सबसे ऊपर खड़ा होऊँगा," मुर्गे ने गर्व के साथ कहा।

"और फिर हम सब एक-साथ मिलकर गाना गायेंगे," कहकर गधे ने अपनी बात ख़त्म की।

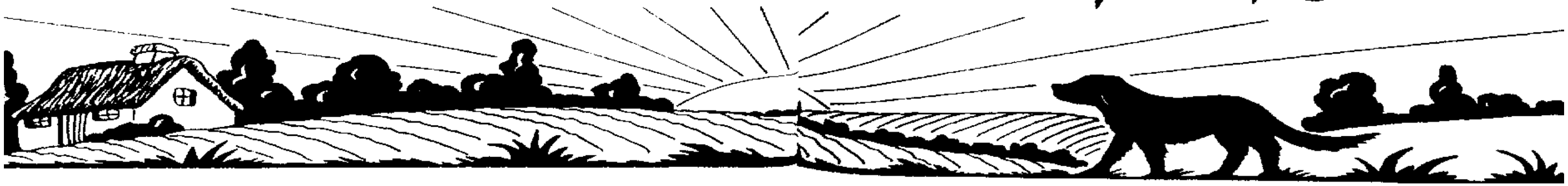

उसके बाद गधा रेंकने लगा, कुत्ता ज़ोर से भौंका, बिल्ली ने म्याऊँ-म्याऊँ की धुन निकाली और मुर्गे ने पूरा दम लगाकर बाँग दी। और फिर वे चारों खिड़की का काँच तोड़कर उसमें से अंदर कूद पड़े।

इससे चोर भय से बुरी तरह काँप उठे। "भूत!" वे चिल्लाये, "चलो, यहाँ से तुरंत निकलो और भागो। भगवान बचाए!!" फिर वे दरवाज़े से निकलकर अँधेरे जंगल की तरफ़ अपने पाँव सिर पर रख कर भागे।

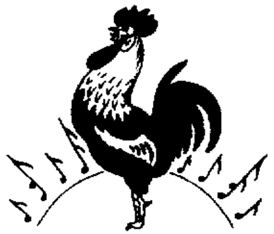

उसके बाद चारों मित्र काफ़ी देर तक ठहाके लगाकर हँसते रहे। फिर वे मेज़ पर पड़े स्वादिष्ट भोजन पर टूट पड़े और उसे पूरी तरह चट कर गये।

"मेरा पेट एक दम भर गया है और मैं थक गया हूँ," कुत्ते ने कहा।

"मैं भी," बिल्ली ने आह भरी।

"मैंने सालों बाद इतना जमकर खाना खाया है," मुर्गे ने खुश होकर कहा, "कुकड़ूँ-कूँ।"

"आज का दिन कितना बढ़िया रहा!" गधे ने संतोष की साँस लेते हुए कहा, "न केवल हम चारों ज़िंदा और आज़ाद हैं बल्कि एक गर्म कमरे में हैं और हमें अच्छा खाना मिला है। इस अच्छे दिन के अंत में बस अब केवल आराम करना ही बाक़ी है।"

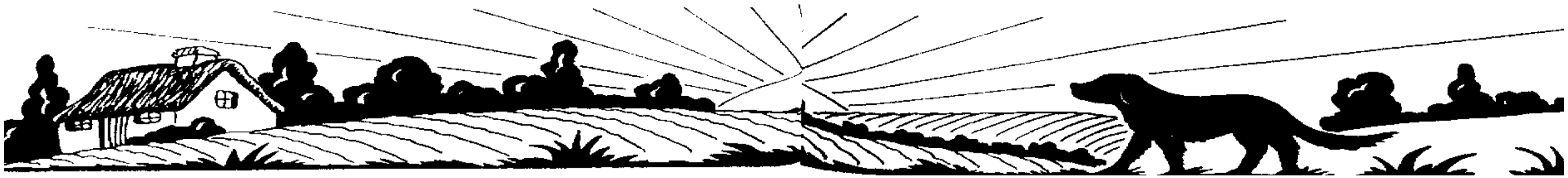

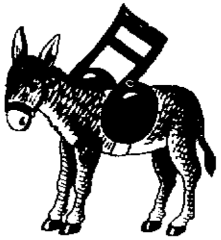

और यही उन चारों मित्रों ने किया। चारों जानवरों के सोने के तरीके भी अलग-अलग थे। बिल्ली तो बुझती आग के पास पाँव समेट कर लेट गयी और कुत्ता मकान के पिछले दरवाज़े से लगकर लेट गया। गधा बाहर के आँगन में चला गया और मुर्गा बाड़ के ऊपर बैठ गया। सभी को बड़ी अच्छी नींद आयी। उनको यह नहीं पता था कि चोर अभी भी पास ही थे और उन्होंने मकान के अंदर की रोशनी को बुझते हुए देख लिया था।

"हम अब दुबारा मकान के अंदर जायेंगे और वहाँ से अपनी लूट का सारा माल लेकर आयेंगे," चोरों के सरदार ने अपने साथियों से कहा।

"परंतु सरदार, अंदर तो भूत छिपा बैठा है?" एक चोर ने हिम्मत करके पूछा।

"हम लोग कुछ जल्दी ही डर गये," चोरों के सरदार ने कहा, "शायद बाहर कोई पेड़ गिरा होगा जिसकी तेज़ आवाज़ से हम डर गये। चलो, हम सब लोग वापस मकान के अंदर चलें। इसमें डरने की क्या बात है? चलो, मेरे पीछे-पीछे आओ।"

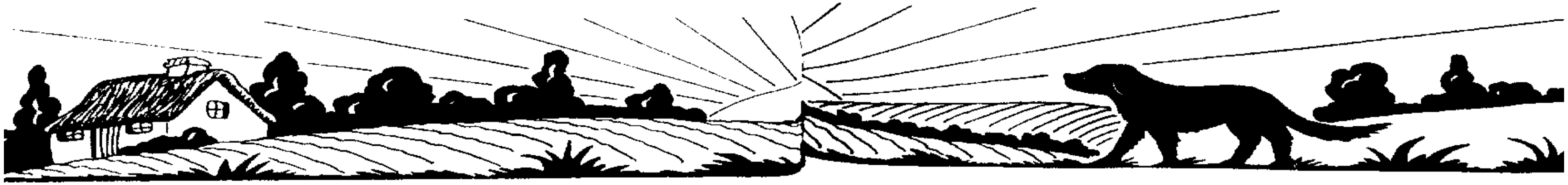

फिर रात के अँधेरे में चोर धीरे-धीरे उस मकान की ओर बढ़े जहाँ वे जानवर सो रहे थे। "अंदर तो एकदम शांति लगती है," उनमें से एक चोर फुसफुसाया, "चलो, पहले मैं अकेले ही जाकर, अंदर का हाल देखकर आता हूँ।" उसके बाद उस चोर ने मकान का दरवाज़ा खोला और अंदर घुसा।

"अंदर तो एकदम घुप्प अँधेरा है और मुझे वहाँ कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा," उसने खुद से कहा, "चलो, मैं एक माचिस जलाकर देखता हूँ। मुझे अभी भी आग के ढेर में एक जलता हुआ कोयला दिखायी दे रहा है।"

परंतु उस चोर को जो दिखा था वह सुलगता हुआ कोयला नहीं बल्कि बिल्ली की चमकती हुई आँख थी। जब चोर ने माचिस की तीली उस ग़रीब बिल्ली की आँख में जाकर चुभोई तो दर्द के मारे बिल्ली चीखी और उछलकर सीधे चोर के मुँह पर ज़ोर का पंजा मारा।

"बचाओ!" चोर चिल्लाया और उसने पिछले दरवाज़े से बाहर निकलकर भागने की कोशिश की। ऐसा करते समय वह कुत्ते से जा टकराया। इससे कुत्ता अपनी नींद से जाग गया और उसने चोर की टाँग में कस कर काट लिया। उसके बाद भागता हुआ चोर आँगन में गधे से जा टकराया। इससे गधे की नींद खुल गयी और उसने जम्भाई लेते हुए चोर को जमकर दुलत्ती मारी। इस सब शोरगुल के कारण मुर्गे की नींद खुल गयी और वह भी ज़ोर से चीखा, "कुकड़ूँ-कूँ! कुकड़ूँ-कूँ! कुकड़ूँ-कूँ!" और उसके बाद वह फिर से सो गया।

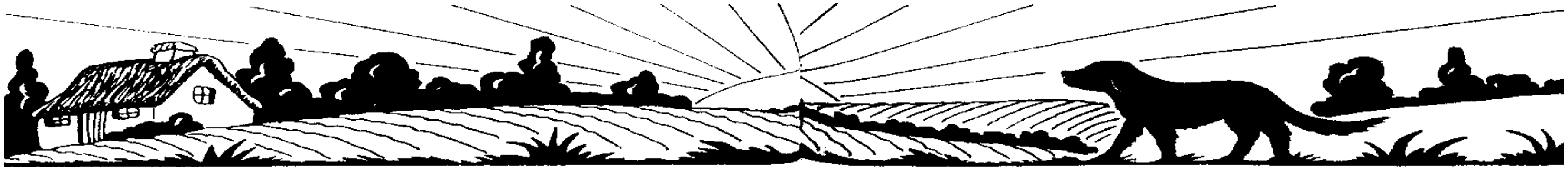

चोर खून से लथपथ, काँपता हुआ वहाँ से भागा और जैसे-तैसे बाक़ी चोरों के बीच जा पहुँचा।

"देखो सरदार, उस मकान में कभी भूल कर भी वापिस नहीं जाना। उसमें एक बड़ी भयानक चुड़ैल रहती है। देखो, उसने मेरा क्या हाल किया...। देखो, उसने मुझे किस तरह से अपने लम्बे नाखूनों से नोंचा-खरोंचा। बात यहीं ख़त्म नहीं हुई। उसके बाद जो कुछ हुआ वह इससे भी बदतर था। पिछले दरवाज़े पर एक आदमी तैनात था। उसने एक धारदार चाकू मेरी टाँग पर कसकर मारा।"

"नहीं!" सारे चोर डर कर एक-साथ चिल्लाये।

"हाँ," अपनी बात के सबूत में उसने उन्हें खून से सनी अपनी टाँग दिखायी। "और मामला यहीं ख़त्म नहीं हुआ। बाहर आँगन में एक भीमकाय राक्षस था जिसने मुझे एक गदा से मारा। देखो, मेरे शरीर की चोटों को देखो। आज रात तो मेरी खूब दुर्गति हुई।"

"लगता है, मकान के अंदर तुम्हें बहुत मुसीबतें उठानी पड़ीं!" चोरों के सरदार ने कहा।

"आप ठीक कहते हैं," चोर ने दर्द से कराहते हुए कहा, "और अभी आपने आख़िरी बात तो सुनी ही नहीं। वहाँ बाड़े पर एक जज बैठा था जो बार-बार एक ही बात चिल्ला रहा था—उन बदमाशों को मेरे पास लाओ!"

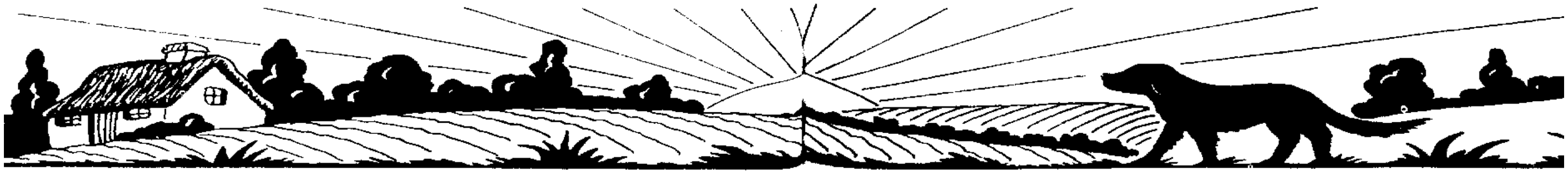

"अब तो बात एकदम पक्की हो गयी। हमें यहाँ से जल्दी से जल्दी भाग निकलना चाहिये," चोरों के सरदार ने अपना अंतिम निर्णय सुनाया, "हम जेल में सड़ना या फाँसी के फंदे से लटकना नहीं चाहते। चलो, लूट का सारा माल यहीं छोड़कर जल्दी से जल्दी यहाँ से कहीं बहुत दूर निकल चलते हैं। जल्दी करो, इससे पहले कि और कोई आफ़त आ जाये।"

"हाँ!" सारे चोर एक साथ चिल्लाये, "चलो, यहाँ से भागें और भूल कर कभी यहाँ वापिस न आयें।"

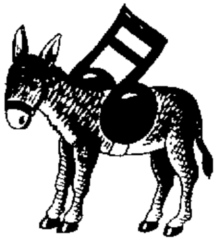

अगले दिन गधे ने अपने मित्रों को जगाया। "अच्छा भाई, अब तो सबने खा-पीकर खूब आराम भी कर लिया। चलो, अब हम लोग ब्रेमेन के लिए रवाना हों, वहाँ जाकर हमें अपनी रोज़ी-रोटी जो कमानी है।"

"परंतु मैं तो यहीं रहना पसंद करूँगी," बिल्ली ने कहा, "यह एक बहुत सुरक्षित जगह है और यहाँ मेरे लिए बहुत सारे चूहे भी हैं। मुझे यहाँ कभी भूखा नहीं रहना पड़ेगा। शहर की ज़िंदगी मुझे अच्छी लगेगी या नहीं, इसका मुझे यक़ीन नहीं।"

"मुझे भी यहीं पर अच्छा लग रहा है," कुत्ते ने भी कह दिया, "यहाँ पर मैं सैकड़ों ,खरगोशों का पीछा कर उन्हें पकड़ सकता हूँ। और वैसे भी मुझे शहर के मुक़ाबले गाँव ही ज़्यादा अच्छा लगता

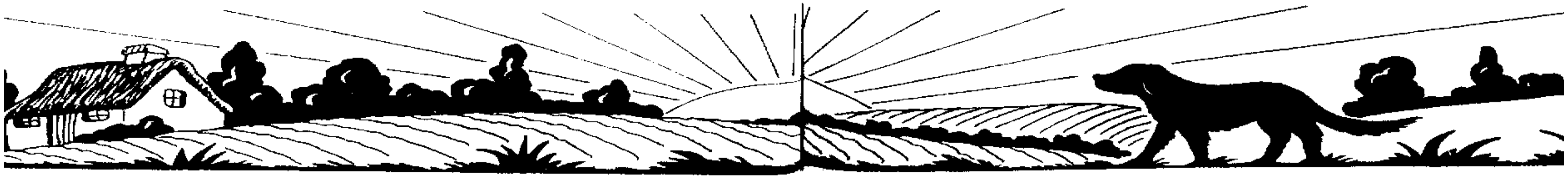

है।"

"मेरे खाने के लिए यहाँ पर काफ़ी कुछ है," मुर्गे ने भी हामी भरते हुए सिर हिलाया, "और आप सब अच्छी तरह जानते ही हैं कि हमें मनुष्यों की दया पर अधिक भरोसा नहीं करना चाहिये। हम सभी यह बात जान गये हैं। अगर हम यहाँ पर कुछ दिन और रहें तो तुम इसका बुरा तो नहीं मानोगे, प्रिय मित्र गधे?"

"देखो, यहाँ मेरे चरने के लिए खूब सारी हरी घास है," गधे ने बड़े संतोष के साथ कहा, "हम चाहें तो यहाँ पर रहकर अपने संगीत का अभ्यास करें और जब हम पूरी तरह तैयार हो जायें तभी ब्रेमेन जायें।"

"मेरी राय में हमें बहुत अधिक अभ्यास की ज़रूरत होगी," कुत्ते ने जल्दी से कहा।

"बिलकुल सही," बिल्ली ने भी जोड़ा, "इसके लिए हमें सालों तक अभ्यास करना होगा।"

"हम यहीं पर अपना अभ्यास जारी रखेंगे और जब हमारी पूरी तैयारी हो जायेगी तभी हम यहाँ से जायेंगे," मुर्गे ने भी कहा।

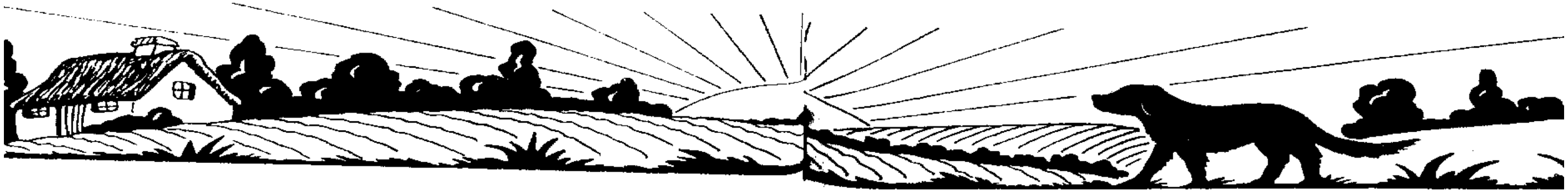

इस तरह वे चारों मित्र उस मकान में खुशी-खुशी रहने लगे। ब्रेमेन जाने की बात लगातार टलती रही और वे वहाँ कभी नहीं गये। परंतु जब कोई व्यक्ति उस मकान के पास से गुज़रता तो उसे दूर से ही संगीत के कुछ मधुर स्वर सुनायी पड़ते:

"ब्रेमेन के समुद्र को निहारने चले
चारों संगीतकार, ब्रेमेन चले
ढेंचू-ढेंचू, भौं-भौं, म्याऊँ-म्याऊँ, कुकड़ूँ-कूँ।

वहाँ पर मिलेगा बहुत सारा धन
गायेंगे चारों लगाके तन-मन
ढेंचू-ढेंचू, भौं-भौं, म्याऊँ-म्याऊँ, कुकड़ूँ-कूँ।
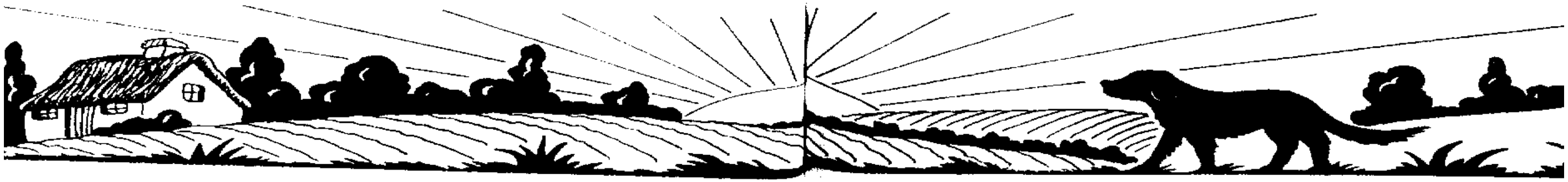
ब्रेमेन में बिछायेंगे वे संगीत का जाल
और फिर जियेंगे हज़ारों-लाखों साल
ढेंचू-ढेंचू, भौं-भौं, म्याऊँ-म्याऊँ, कुकड़ूँ-कूँ।"